सान्निध्य

जीवन विज्ञान अनुशास्ता

आचार्यश्री महाश्रमणजी

पात्रता

प्रतियोगिता में शिक्षण संस्थाओं से जुड़े सभी पक्ष भाग ले सकते हैं। आयु व लिंग का बंधन नहीं है।

आधार साहित्य

जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज का संकल्प – आचार्य महाप्रज्ञ
संवादों में जीवन विज्ञान – मुनि विजय कुमार

प्रकाशक

जैन विश्व भारती, लाडनूं

प्रक्रिया : –

1. प्रतियोगिता हेतु प्रवेश शुल्क रुपये 100/– रखा गया है।
2. प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी प्रेरक अथवा संस्था प्रधान को प्रवेश शुल्क रुपये 100/– नगद जमा करवाकर **प्रतियोगिता प्रश्नोत्तरी** एवं आधार पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।
3. संस्था प्रधान अथवा प्रेरक को प्रवेश शुल्क की 10 प्रतिशत राशि प्रोत्साहन के रूप में दी जायेगी।
4. प्रश्नोत्तरी एवं आधार पुस्तकें सीधे 'जीवन विज्ञान अकादमी, केन्द्रीय कार्यालय, जैन विश्व भारती, लाडनूँ – 341306, जिला–नागौर (राजस्थान) से भी रुपये 100 नगद जमा करवा कर अथवा रुपये 150/– (डाक/पैकिंग खर्च सहित) Jeevan Vigyan Academy A/C Jain Vishva Bharati, Ladnun के नाम देय बैंक ड्राफ्ट भेजकर प्राप्त की जा सकती है।
5. प्रश्नोत्तरी पूर्ण कर भेजने की अन्तिम तारीख 31 जनवरी 2016 होगी।
6. प्रश्नोत्तरी भेजने का पता – संयोजक, जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता–2015, जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ – 341306 (नागौर–राजस्थान)।
7. जाँची हुई प्रश्नोत्तरी लौटाई नहीं जायेगी।
8. सभी प्रतिवाद का हल विशेषाधिकार समिति करेगी। विशेषाधिकार समिति का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।
9. परिणाम की सूचना यथा समय www.jvbharati.org, www.terapanthinfo.com एवं www.jeevanvigyanacademy.com पर उपलब्ध करवा दी जायेगी।
10. **पुरस्कार समारोह :** प्रश्नोत्तरी की जांच होने पर वरीयतानुसार प्रथम तेरह प्रतिभागियों को आमंत्रित कर आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में सम्मानित किया जावेगा –

प्रथम पुरस्कार	–	11000/– रुपये मूल्य का
द्वितीय पुरस्कार	–	7000/– रुपये मूल्य का
तृतीय पुरस्कार	–	5000/– रुपये मूल्य का
सांत्वना पुरस्कार	–	2100/– रुपये मूल्य का (वरीयता से अन्य दस को)

प्रमाण पत्र– प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागी प्रमाण–पत्र प्राप्त करने के अधिकारी होंगे। प्रमाण–पत्र यथा समय बुक–पोस्ट द्वारा डाक से प्रेषित किये जायेंगे।

नोट : जांची गई उत्तर पुस्तिकाएं लौटाई नहीं जावेंगी। सभी प्रतिवाद का हल विशेषाधिकार समिति द्वारा किया जावेगा।

जीवन विज्ञान अकादमी

केन्द्रीय कार्यालय

जैन विश्व भारती,

लाडनूँ – 341306 (राजस्थान)

फोन नं. 01581 – 226974

e-mail : jeevanvigyanacademy@gmail.com

website : www.jvbharati.org

www.jeevanvigyanacademy.com

जीवन विज्ञान

संस्कार निर्माण प्रतियोगिता 2015

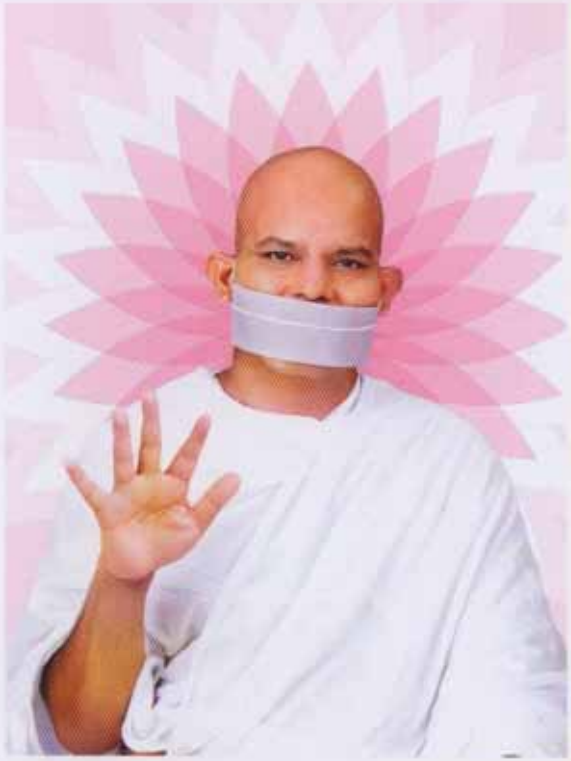

उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तारीख

31 जनवरी 2016

आयोजक

जैन विश्व भारती, लाडनूँ – 341306 (राजस्थान)

संयोजक

जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती,
लाडनूँ – 341306 (राजस्थान)

प्रायोजक

माणकराज शान्ताबाई सिंघवी चेरीटेबल ट्रस्ट
वंदवासी–चैन्नई

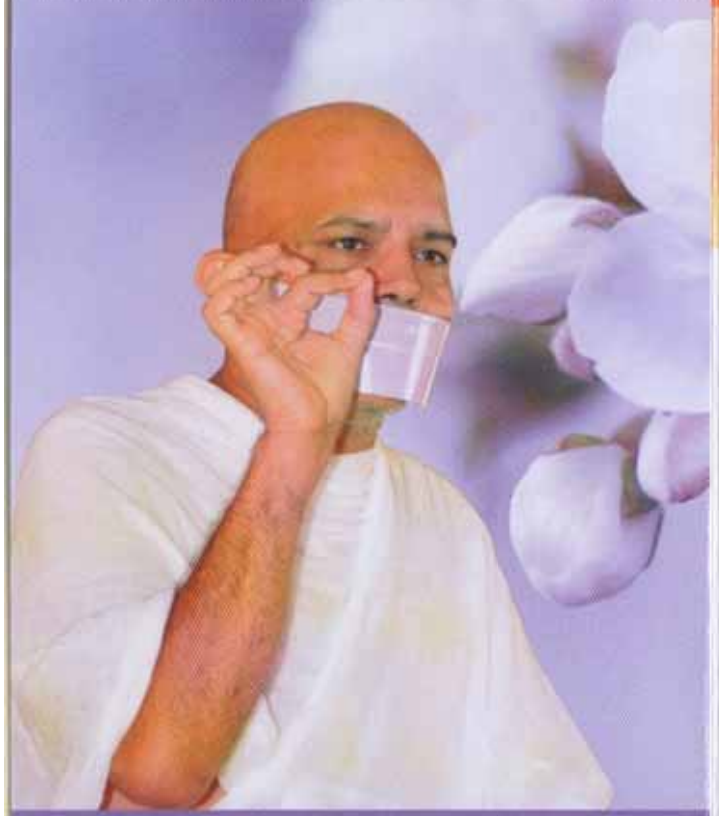

आशीर्वचन

जीवन विज्ञान सम्यक् जीवन जीने की कला सिखाता है। आज के युग की आवश्यकता है कि कैसे अच्छा जीवन जीया जाये। यह कला जीवन विज्ञान से संभव है। जीवन विज्ञान के प्रयोगों से सर्वांगीण विकास संभव है।

जीवन विज्ञान शिक्षा जगत् के लिये महत्वपूर्ण आयाम है, जिसके द्वारा शिक्षा जगत् में क्रान्तिकारी परिवर्तन घटित हो सकता है। जो मानव जाति के लिये लाभकारी व कल्याणकारी सिद्ध होगा।

आचार्य महाश्रमण

शिक्षा ओर समाज व्यवस्था में गहरा अनुबंध है। वह समाज व्यवस्था के अनुरुप होकर ही समाज को लाभान्वित कर सकती है। उसका काम है समाज–व्यवस्था को गतिशील बनाने वाले व्यक्तियों का निर्माण। जीवन विज्ञान की पृष्ठभूमि में व्यक्ति और समाज–दोनों को संतुलित मूल्य दिया गया है। समाज के संदर्भ से कटा हुआ व्यक्ति रामू भेड़िया बन सकता है, दार्शनिक और वैज्ञानिक नहीं बन सकता। व्यक्तिगत क्षमता के बिना वह विद्यालय का जीवन जीकर भी बौद्धिक विकास नहीं कर सकता। सामाजिक और वैयक्तिक दोनों अस्मिताओं का योग होने पर ही पूर्ण व्यक्तित्व विकसित होता है।

आचार्य महाप्रज्ञ

शिक्षा में संतुलन की प्रक्रिया : जीवन विज्ञान

''सा विद्या या विमुक्तये'' विद्या वही है जो विमुक्ति प्रदान करती है। शिक्षा के दो आयाम है– अध्ययन और अभ्यास। अभ्यास को आज विस्मृत कर दिया गया है। अध्ययन ही अब शिक्षा का अर्थ रह गया है। उसका उद्देश्य आजीविका उपार्जन ही रह गया है। जबकि शिक्षा का मूल उद्देश्य है – शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास को आधार बनाकर मनुष्य की आन्तरिक चेतना को जागृत करना। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और भावनात्मक स्वास्थ्य व्यक्तित्व विकास का पहला चरण है। व्यवहार कौशल, समायोजन में दक्षता, मानसिक संतुलन, मैत्री, समता आदि व्यक्तित्व विकास का दूसरा चरण है। दोनों मिलकर ही व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करते है। उससे ही ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना साकार होती है। जब व्यक्ति स्वार्थ चेतना का परित्याग कर परमार्थ चेतना की ओर अग्रसर होता है, तब ही वास्तविक स्वतंत्रता और शान्ति उपलब्ध होती है।

इतने बड़े आदर्श को प्राप्त करने के लिये स्वयं को बदलना होगा। व्यक्ति का रूपान्तरण ही समाज के परिवर्तन का आधार बनता है। समाज में संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण के लिये शिक्षा के उद्देश्य को बदलना होता है। आजीविका या जीवनयापन किसी शिक्षा का उद्देश्य नहीं हो सकता। संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण में अभ्यास और अध्ययन दोनों का समुचित उपयोग होना चाहिए, तब ही संतुलन पैदा हो सकता है। आज संतुलन का प्रश्न महत्त्व का हो गया है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने लिखा है– ''व्यक्तित्व निर्माण में प्राण का संतुलन प्रथम तत्त्व है। दूसरा तत्त्व है जैविक संतुलन। तीसरा तत्त्व है–आस्था का जागरण और चौथा तत्त्व है–परिष्कार। इनके द्वारा संतुलित व्यक्तित्त्व की परिकल्पना की गई है।''

जीवन विज्ञान विद्यार्थी, अध्यापक और अभिभावक तीनों के लिए उपयोगी है। इसमें आयु, लिंग की कोई सीमा नहीं है। इसलिए सभी वर्ग के लोग इसमें शामिल होकर लाभान्वित हो सकते हैं।

प्रश्नोत्तरी में दिए गये प्रश्नों के उत्तर जीवन विज्ञान: स्वस्थ समाज का संकल्प एवं संवादों में जीवन विज्ञान नामक आधार पुस्तक में से खोजकर देना है। इससे सहज रूप से प्रतियोगी को उत्तर खोजने का पुरूषार्थ करने पर उससे सम्बन्धित विषय का ज्ञान होगा। ज्ञान की आराधना से ही संस्कारों का निर्माण होता है। संस्कार–निर्माण से जीवन श्रेष्ठ बनता है। प्रतियोगी इसमें शामिल होकर स्वयं के हित के साथ ही अर्जित ज्ञान का परिवार व समाज में उपयोग कर सबको लाभान्वित करेंगे, ऐसी मगंल आशा की जा सकती है।

मुनि किशनलाल

गत सात वर्षो से आयोजित की जा रही **'जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिताओं'** के सफल आयोजन की निरन्तरता में इस वर्ष भी यह प्रतियोगिता **स्व. श्री एस. ए. माणकराज सिंघवी एवं स्व. श्रीमती शान्ता बाई सिंघवी'** की पुण्य स्मृति में **माणकराज शान्ताबाई सिंघवी चेरीटेबल ट्रस्ट, वंदवासी– चैन्नई** के सौजन्य से जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ द्वारा आयोजित की जा रही है।

प्रश्नोत्तरी क्रमांक 0762

जीवन विज्ञान

स्वस्थ समाज की संरचना

जीवन-विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता 2015

प्रश्नोत्तरी

आयोजक : जैन विश्व भारती, लाडनूँ-341306 (नागौर-राज.)

प्रायोजक : माणकराज शान्ता बाई सिंघवी चेरीटेबल ट्रस्ट, वंदवासी, चैन्नई

प्रकाशक : जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ (राजस्थान) 341306

जीवन-विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता-2015

पुरस्कारों का विवरण

प्रथम पुरस्कार 11000/- मूल्य का

द्वितीय पुरस्कार 7000/- मूल्य का

तृतीय पुरस्कार 5000/- मूल्य का

वरीयताक्रम से अन्य दस सांत्वना पुरस्कार 2100/- मूल्य का प्रत्येक को

नोट :- प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतिभागी को प्रमाण-पत्र प्रदान किया जावेगा।

अन्तिम तिथि :

दिनांक 31 जनवरी 2016 तक प्रश्नोत्तरी संयोजक, जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता 2015, जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ - 341306 जिला-नागौर (राजस्थान) को पहुंचना अनिवार्य है।

विशेष :

1. जाँची हुई प्रश्नोत्तरी लौटाई नहीं जायेगी।
2. सभी प्रतिवाद का हल विशेषाधिकार समिति करेगी। विशेषाधिकार समिति का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।
3. परिणाम की सूचना वेबसाइट पर यथासमय उपलब्ध करवा दी जावेगी।
4. एक से अधिक विजेता होने पर परिणाम लॉटरी द्धारा निकाला जायेगा।

सम्पर्क सूत्र

जीवन विज्ञान अकादमी

(केन्द्रीय कार्यालय)

जैन विश्व भारती, लाडनूँ - 341306 (राजस्थान)

Phone No. 01581 – 226974

e-mail - jeevanvigyanacademy@gmail.com

Website : www.jeevanvigyanacademy.com

संवादों में जीवन विज्ञान

मुनि विजय कुमार

जीवन विज्ञान

स्वस्थ समाज का संकल्प

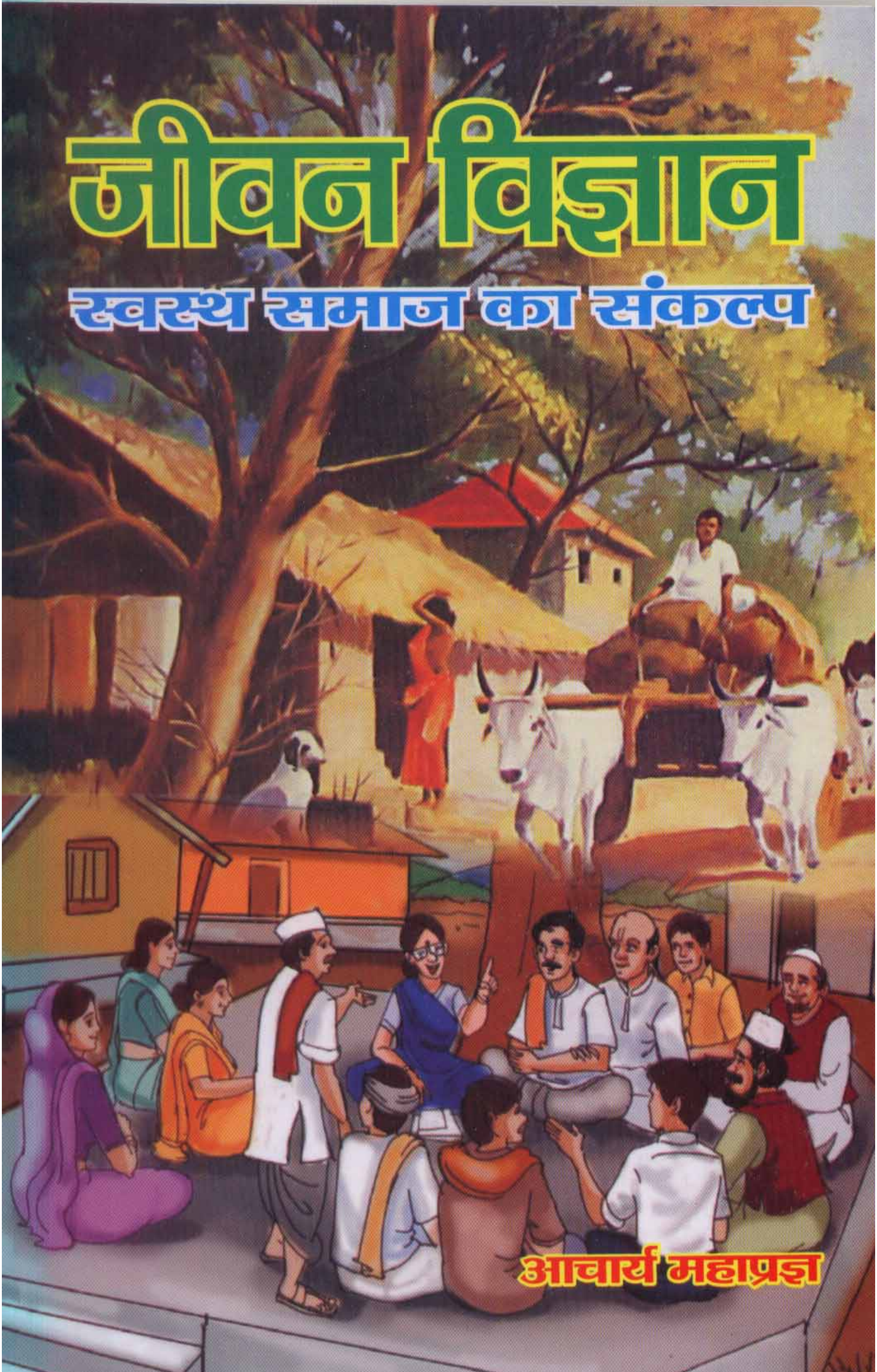

आचार्य महाप्रज्ञ